सत्य कबीराय नमः

PART 7

अमर सिंह बोध

धर्मदास वचन - चौपाई

धर्मदास उठे ले श्रद्धा साथ । करते विनती जोड़ अपने हाथ ।
हर युग जीव चेताये स्वामी । काल फांस से छुड़ाये स्वामी ।
युगकमोद जीव तारने आये । कथा वही प्रभु हमें सुनाये ।
यमराज से जीव छुड़ाये । सतलोक हंस तुम पहुंचाये ।

सतगुरु वचन

धर्मदास मैं तुम्हे बताता । युगकमोद की कथा सुनाता ।
पुरुष पास जब हम रहते । बात तबकी हम तुमसे कहते ।
पुरुष आज्ञा तब हमें सुनाये । पंथ प्रसार का कार्य हमें बताये ।
अरब खरब जीव असंख्य अपार । सबको लाये पुरुष के द्वार ।
रहते सब हंस पुरुष के पास । करते कौतूहल लोक निवास ।
भूख प्यास ना उन्हे सताता । पुरुष ध्यान बस उनको भाता ।
सत पुरुष दयालु अति महान । छवि उनकी असंख्य सूर्य समान ।
सेज पुष्प बनी मन भावन । सुख विनोद सब लोक सुहावन ।
बैठे पुरुष सेज पर आये । ज्ञानी तब उन्होने वहाँ बुलाये ।
ज्ञानी तुम जाओ अब संसार । जाके करो हंस भव से पार ।
सिंगल द्वीप अमरपुर गांव । राजा इक अमरसिंह नाम ।
जाकर उन्हे चेताओ ज्ञानी । जग में अंश बने अज्ञानी ।

ज्ञानी वचन

ज्ञानी बोले जोड़ अपने हाथ । विनती सुनो हे हंसन के नाथ ।
संसार गमन आज्ञा आप सुनाये । मुक्ति नाम पहले आप बताये ।

दोहा
क्या नाम दूं हंस को, बताइये जग करतार ।
मुक्ति नाम वो कौनसा, जो ले जाये भवपार ।

चौपाई

नाम जो कालफन्द छुड़ाये । जिससे हंस लोक सिधायें ।
नाम वो मैं आपसे पाऊं । भवसागर को मैं तभी सिधाऊं ।

पुरुष वचन

वचन हमारे तुम लो जान । आज्ञा हमारी लो तुम मान ।
सब राह हम तुम्हे दिखाएँ । जिससे हंस भव तर जायें ।

दोहा :- बालक को बीरा देना, तिरिया को कुटिल प्यार ।
सुरतवंत को यह शब्द है, ले पुरुष नाम आधार ।

चौपाई

आज्ञा दिये हमें हंस कीहार । ज्ञानी पँहुचो शीघ्र संसार
मूलनाम तुम जीवों को बताना । सकल जीवों को अपना बनाना ।
लोक से ज्ञानी तभी सिधाये । धर्मराज से वो टकराये ।
देख धर्मराज लगे डराने । देख ज्ञानी वो अपनी माने ।
ज्ञानी तुम हमको ये बतायें । किस कारण जग में आये ।
चौदह भुवन राज हमको दीन्हा । फिर जग आगमन काहे कीन्हा
आहार हम संसार से पाते । पुरुष दया अब काहे दिखाते ।
राज हमारा है संसार । सुख दुख जीवों को देते अपार ।
ब्रह्मा विष्णु शिव कहलाते । मेरे अंश जग पूजें जाते ।
हम तो शून्य में करते वास । कोई ना पँहुचे हमारे पास ।
देकर राज इनको अपना सारा । देखता रहता मैं होकर न्यारा ।
~~ज्ञानी तुम जग मेरे जाओ~~ ।
ज्ञानी तुम जग मेरे सिधाओ । पर वचन मेरे सुनते जाओ ।
पुरुष वचन रखना लाज । जीव हेतु फिर करना काज ।

ज्ञानी वचन

सुनो वचन निरंजन राय । सब बात मैं कहूँ समझाय ।
कोटि ज्ञान हम तुम्हें बताये । बारह पंथ तुम अपने चलाये ।
उसी से चले आहार तुम्हारा । धर्म इतना था वचन हमारा ।
धर्मदास सुनो तुम ध्यान लगाय । धर्मधीर ऐसा तुम करना पाय ।
इस कारण हम यहाँ सिधाये । जीव हेतु प्रथ्वी पर आये ।

अमृतपुरी नगर एक बनाये । सिंगलद्वीप माहि उसे बसाये ।
वहाँ आये करने हम प्यार । राजा के पहुँचे हम दरबार ।
सोलह रवि ज्योति जलाये । जगमग महल बहुत बनाये ।
सोलह रवि सम ज्योत जलाये । प्रकाशित बहुत महल बनाये ।
राजा एक अमरसिंह नाम । लगाये कचहरी बहुविधि धाम ।
देख प्रकाश को राजन धाये । दौड़ महलों में अपने आये ।
आये महल में सतगुरु पास । पकड़े चरण उनके कर विश्वास ।

समरसिंह वचन

हे संत सुनिये मेरी प्रार्थना । कुछ वचन तो क्रोध ना करना ।
त्रिदेवों का कोई तुम हो रूप । या हो परब्रह्म स्वरूप
समझ ना आता कुछ हमारी । तुम हो कहो कुछ निरवारी ।

सतगुरु वचन

दोहा :- हम आये सतलोक से, करने जीव भवपार ।
ले जाऊँ हंस लोक को, करके यम निस्तार ।

चौपाई

कहके गुप्त हुये भगवान । राजा को हुआ कष्ट महान ।
हुये विकल निकले ना वाणी । तड़पे मीन ज्यों बिन पानी ।
सतगुरु बिन तड़पे राजा ऐसे । स्वाति बूंद बिन चातक जैसे ।

दोहा :- क्यूँ मुझे दर्श दिये, फिर क्यूँ हिये भगवान ।
पलक झपे कहाँ गये, किस दिशा गये सुजान ।
हम जीत अभागे बड़े, सतगुरु हुये जो गुप्त ।
कैसे मन धीर धरे, दर्शन बिन पाके हो तृप्त ।

दोहा दर्श देकर छिप गये, अभागा मुझको जान।
जबतक दर्श पाऊँ ना, नहीं करूँ जलपान।

चौपाई

पाँच दिन जब ऐसे बिताये। राजा को चिन्ता बढ़ती जाये।
जान कर सतगुरु वहाँ पर आये। आकर के राजा को उठाये।
महलों में हुआ बहुत उजाला। सतगुरु दर्श मिला जो निराला।
राजा दौड़ वहाँ पर आये। आकर पद शीश नवाये।
~~बड़े सौभाग्य प्रभु~~
बहुत सौभाग्य प्रभु हमारा। दर्श मैंने जो पाया तुम्हारा।

सतगुरु वचन

जानी कहे सुने हे राया। यमफन्द से तुम्हे छुड़ाने आया।
सब जग पड़ा काल के फन्द। बहुविधि बांधे जीव के बन्द।
निम धर्म कुल कर्म निभाये। ये फंदा सब जगको फंसाये।
जो कोई हंसा होय सुभागी। काल फांस से बचे बड़भागी।
यमराज ना उसे फंसाये। सुरति निरति शब्द ध्यान लगाये।

दोहा - शब्द सुरति ध्यान लगाइये, कर्म भर्म दे छोड़।
हंस गति जब मिले, क्या करे यम चोर।

अमर सिंह चौपाई

साहिब जो हम आज्ञा पायें। वचन ये रानी को सुनायें।
अब सतगुरु जो छोड़ के जाओ। जीवित ना फिर हमको पाओ।

सतगुरु वचन

राजा को सतगुरु बताये | राजन अब हम कहीं ना जाये |
तब राजा वहाँ से जाते | सात खण्ड पर फिर वो आते |
सुरवर कला रानी वहाँ करती वास | राजा वचन कहने गये उसके पास |
सुनो रानी एक वचन हमारा | अपने जीव का करो उबारा |

दोहा:- राजा रानी से कहे, मानो वचन हमार |
साहिब आये लोक से, पद प्रीत रखो अपार |

रानी वचन चौ०

रानी कहे सुनो महाराज | सतगुरु आये क्या करने काज |
किस कारण यहाँ तुम आये | मुक्ति वचन तुम हमें सुनाये |

राजा वचन

रानी कहूँ ये तुमसे बात | लीला बहुत दिखाये हमको नाथ |
एक दिन लीला वो हमें दिखाये | महलों में प्रकाश वो फैलाये |
तब हम तत्क्षण वहाँ पे धाये | महलों में हम दौड़के आये |
~~दर्शन पाकर हुआ हमें~~ आनन्दा |
दर्श पाकर आनन्द हुआ अपार | पड़ते चरण उनको बारम्बार |
अदृश्य तभी हुये भगवान | चार दिवस ना किये जलपान |
पुरोहित द्विज सब वहाँ पर आये | सब मिलकर हमें समझाये |
बनिया मोदि सोर आये | छीया सेठ चौधरी धाये |
आई भतीजि संग प्रजा आई | सबने बोले हमें बहुत समझाई |
सबने मिलकर हमें उठाया | पानी लाकर मुँह धुलवाया |
मुँह धोते हम लेकर पानी | तभी दर्शन देने आये ज्ञानी |
दर्शन पाके मैं हुआ सनाथ | रानी सत्य कहूँ तुमसे बात |

रानी वचन

राजा बात बताऊँ तुझको। | सत्य कहूँ जो मानो मुझको।
सत्य बात आप मुझे बताये। | बुराई नजर ना इसमें आये।

राजा वचन

रानी मानो तुम हमारी बात। | साहिब चरण जाके रखो माथ।
धन यौवन तन रंग पतंग। | झण में होते राख अंग।
बात हमारी मान लो रानी। | संत दर्शन कर लो कामिनी।
महल से बाहर रानी आई। | हाथ नारियल आरती लाई।
स्वरकला जब उतर कर आई। | सात सहेली संग अपने लाई।
राजा बैठे निज दरबार सजाये। | रानी तभी दरबार में आये।
देख स्वरकला को सब दरबारी। | करते अचरज मन में भारी।
दर्श ना रानी कभी दिखाती। | किस कारण आज यहाँ पर आती।
रानी सौन्दर्य सूर्य समान। | माणिक सम लगे रूप महान।
सतगुरु सम्मुख रानी आई। | नारियल भेंट आकर उन्हें चढ़ाई।
रानी आरती थाल लेकर आती। | कर निछावर गुरु महिमा गाती।

दोहा:- रानी खड़ी दरबार में, सुनो संत धर्मदास।
रानी और सूर्य का, एक हुआ प्रकाश।

चौपाई

प्रेम भक्ति हृदय में बसाते। | राजा रानी तब शीश झुकाते।
राजा खड़े जोड़ अपने हाथ। | हृदय उपजा प्रेम श्रद्धा साथ।
साहिब दया अपनी हमें कीजिये। | आगमन घर हमारे कीजिये।

मन्दिर अपने वो लेकर जाते । पलंग बिछाकर हमें बिठाते ।
राजा तब भर पानी लाये । चरण हमारे वो धुलाना चाहे ।
राजा पैरों पर डाले पानी । चरण धुलाये स्वरकला रानी ।
चरणामृत तब शीश चढ़ाया । ले चरणामृत वो विनती गाया ।
जैसा भक्ति भाव राजा पाते । धर्मदास सब तुम्हें बताते ।

धर्मदास वचन

राजा की करनी प्रभु बताओ । साहिब ना कुछ अब छिपाओ ।
राजा ने तुरंत पानी मंगाया । स्नान उससे हमें करवाया ।
भोजन करने उसने हमें बुलाये । दो थाल भोजन के मंगाये ।
थाल ऊपर भूमि से रहते । जब रानी को थाल हैं दिखते ।
रानी ये राजा को बताती । गुरु लीला राजा को दिखाती ।
अधर भूमि से इनका थार । प्रसाद से भूख मिटाये सब संसार ।
गुरु सम्मुख प्रजा सारी बुलाई । महा प्रसाद अब देओ गुसाईं ।
हमसे पाकर राजा महाप्रसाद । पाकर प्रसाद आई उसको याद ।
पुरुष लोक सुधि आई उसको । ज्ञानी आकर चेताये हमको ।
हम भूले आप हमें चेताये । यमराज ना अब हम फंसाये ।
इस देश कठिन काल की फाँसी । काम क्रोध मद लोभ विनाशी ।

दोहा :- काम क्रोध और लोभ सब, त्रिगुण बसे मन माहीं ।
सत्य नाम पाये बिना, काल फांस छूट नाहीं ।

चौपाई

निज इच्छा राजा हमें बताते । राजा संग हम वहां से जाते ।
सुमेरु पर्वत हम उन्हें लेके जाते । पुर वैकुण्ठ उनको दिखाते ।

जय विजय वहाँ पहरा वहाँ लगाते । साहिब को देख वो घबराते ।
साहिब सम्मुख सहम कर जाते । आदर से शीश उन्हें झुकाते ।
विनती हमसे किये दरबान । कहाँ जाते भूपति लोक सुजान ।
तब हमने उन्हें समझाया । सत्यनाम एक जीव ने पाया ।
पुर वैकुण्ठ वो देखना चाहे । इसकारण यहाँ हम हैं आये ।
तब हम वहाँ से जाते । चित्रगुप्त सम्मुख हम दोनों जाते ।
चित्रगुप्त दरबार वहाँ सजाते । पुण्य पाप का हिसाब लगाते ।
देख साहिब को वो घबराया । हाथ जोड़ शीश उन्हें नवाया ।
आसन पर साहिब को बिठाया । गुणगान बहुत उनका गाया ।
धन्य भाग्य हुये आज हमारे । साहिब जो आप यहाँ पधारे ।
आये गुप्त साहिब के पास । विनती कर बहुत हुये उदास ।
साहिब पूछूँ इक तुमसे बात । नृप को क्यूँ लाये अपने साथ ।
यह राजा तो हमारा चोर । अधम पापी ये बहुत घनघोर ।
साहिब चित्रगुप्त को समझाते । लेख राजा के बदलवाना चाहते ।
सुन गुप्त बहुत क्रोध दिखाये । लेख राजा के बदल ना पाये ।
गुप्त कर्म नर जो भी करता । वो निज चोर हमारा बनता ।

दोहा :- प्रकट करम नर जो करें, चित्र करें उसका लेख ।
भूपति लोक ये कहते, पाप पुण्य को देख ।

चौपाई

तब साहिब इक युक्ति बनाते । पारस पत्थर एक वहाँ दिखाते ।
अनेक कर्म से लोहा भरते । पारस से सोना उसको करते ।

साहिब गुप्त को समझाये । सोना ना अब लोहा बन पाये ।
लोहा से ज्यों कंचन बनता । इसविधि हंस भी निर्मल बनता ।
इतना सुन यम सकुचाते । बोल मुख से निकल ना पाते ।
हे यमराज वचन सुनो मेरे । राजा को करूँ हवाले तेरे ।
राजा को यहाँ से ले जाओ । यमलोक तुम इसको दिखलाओ ।
~~यमराज आज्ञा सुनाते~~
यमराज आज्ञा तभी सुनाते । दूत संग नृप यमलोक भिजवाते ।
राजा को दूत लेकर जाते । यमपुरी सारी राजा को दिखाते ।

नरक को वर्णन

एक को कोल्हू में पिराते । औंधा मस्तक दूजे को झुलाते ।
एक को गरम खम्भे से बँधवाया । बहुत भाँति डर उसे दिखलाया ।
एक जीव को चबाकर खाते । भागे बहुत पर बच नहीं पाते ।
एक जीव को कुण्ड में डारे । बहुत मोगरी सिर उसके मारे ।
कुण्ड चौरासी यमलोक बनाये । भांति भांति यम त्रास दिखाये ।
बहुत त्रास जीव वहाँ पर पाते । देख जिसको राजा घबराते ।
एक कुण्ड में रक्त भराई । दूजा कुण्ड में पीब दिखाई ।
तीजे कुण्ड में मूत्र भराई । एक योजन कुण्ड गहराई ।
योजन चार चौड़ाई उसकी । योजन चार गन्ध आती जिसकी ।
पड़े जीव जिसमें अति अपार । चौथा कुण्ड नरक की धार ।

दोहा :- पड़े जीव उस कुण्ड में, कोई ले उन्हें उबार ।
पड़ती मोगरी शीश पर, करते बहुत पुकार ।

चौपाई

पाँचवे कुण्ड में अग्न अपार । जिसमे जीव करे चीख पुकार ।
योजन लाख गहराई उसकी । पाँच लाख चौड़ाई जिसकी ।
करते पुकार जहाँ जीव अपार । कोई आकर ले हमें उबार ।
राजा देखकर यम का लोक । सिर झुका कर वो करता शोक ।
जीव जो करता झूठी बातें । यमराज जीव्हा उसकी काटें ।
झूठी साख जो भी भरता । विषैला नाग उसको डसता ।
अकारण जो किसी को मारे । ऊपर पाता कष्ट बहुत ही सारे ।
वपुरुष तज पर पुरुष संग जीवे । अग्नि पुरुष संग उसके मिलावे ।
पुरुष जो निज नारी त्यागे । पर नारि से मन उसका लागे ।
अग्नि नार संग उसके मिलावे । यहि विधि यम त्रास दिखावें ।
एक एक को भय दिखाते । हाथ छुरी ले कण्ठ चलाते ।
एक जीव को खड़ा कराया । फिर हुक्म चीलों को सुनाया ।
काग गिद्ध नोंच उसको खाते । जीव कष्ट बहुत नरक में पाते ।
जो नर नारी मदिरा पावें । गरम तेल यम उसे पिलावें ।
सन्त साधु निन्दा जो भी करते । झुठी साख पंच में भरते ।
जल जीव को उसका मिलता । हर अंग में कोड़ निकलता ।
राजा देख यम का लोक । करता बहुत मन में शोक ।

दोहा देख राजा यम पुरी, हुआ मन होशियार ।
विनती साहिब से करे, साहिब लो हमें उबार ।

चौपाई

नृप और दूत पहुँचे वहाँ । सजे चित्रगुप्त दरबार जहाँ ।
सिंहासन जानी वहाँ विराजे । राजा तभी चरण उनके लागे ।

राजा वचन

तब राजा चरण रखता माथ । इस बार हमको बचलो नाथ ।
यम देश मिलता बहुत ही त्रास । सुर नर मुनि पड़े यम की फांस ।

दोहा :- सुनी कथा जब नरक की, धर्म गये भय मान ।
सतगुरु से कहने लगे, स्वामि करो और बखान ।

सतगुरु वचन चौपाई

कहें कबीर धर्म तुम्हें बताऊं । नरक वृतान्त तुम्हें सुनाऊं ।
यमराज उपाय ऐसे करता । पाप पुण्य के जाल वो बुनता ।
पाप पुण्य रच वो जीव फँसाये । कर्म फल जीव अपने पाये ।
पापी पाप कर नरक में जाते । जो करे पुण्य वो स्वर्ग सिधाते ।
कर्मवश जीव गर्भ में जाते । यहि विधि काल जीव भरमाते ।
सुन धर्मदास नरक की बात । तुमसे कहुं ~~सब~~ मैं सब विख्यात ।
यमलोक ~~के~~ इतिहास तुम्हें बतायें । अद्भुत कष्ट जीव वहां पर पायें ।
ठेका जीव का यम के पास । यमराज मन करे चिन्ता वास ।
किंकर गण तब आज्ञा पाये । चित्रगुप्त आज्ञा उन्हें सुनायें ।
आज्ञा ले गण जग आवें । जीव पकड़ कर वो ले जाते ।
यम दरबार जहाँ सजाते । यम सम्मुख जीव लेकर आते ।
रवि सुत वहाँ सिंहासन बैठे । यम गण जहाँ विराजत रहे ।
काल सेन जहाँ सभी विराजें । शास्त्र प्रवर्तक मुनिवर राजें ।
धर्म शास्त्र के कर्ता सारे । सभी जीव जग जाते मारें ।
व्यास पराशर आदिक सारे । तन त्याग यमलोक सिधारें ।
यम सहायक ये सारे बनते । पाप पुण्य का लेखा धरते ।
~~काल के ये साथी सारे~~ ।
काल के हैं ये साथी सारे । आंखो से हमने देखे नजारे ।
धर्म अधर्म का सार समझते । सब मिल न्याय कर्म का करते ।
चित्रगुप्त जब कर्म बही सुनाते । धर्मराज को कह समझाते ।
जो पाप जग आकर करते । यमराज लेख जब उनका सुनते ।
निज दूतों को निकट बुलाते । यथायोग्य सजा ~~यमराज~~ जीवों को सुनाते ।

जीव जो कर्म अच्छे करते । सुन्दर पावन दूत वो बनते ।
स्वर्ग भोग यम उन्हें कराते । अर्थ धर्म सुख उन्हें सुहाते ।

दोहा :- पाकर के पापी जीव को, दूतों से कहें यमराज ।
नरक की घोर यातना, दो इनको तुम आज ।

यमगण आज्ञा यम की पाते । घोर त्रास जीवों को दिखाते ।
इसविधि यम करें विलास । अब विस्तार से सुनो धर्मदास ।
बहु विधा जो जग में पाते । वेद विचार से ब्रह्म समाते ।
आत्मा ब्रह्म को जो एक ही जाने । ब्राह्मण सम जो वेद बखाने ।
ऐसे नर को जब कोई मारे । ब्रह्म हत्या उसे वेद पुकारे ।
ब्रह्मरूप ब्रह्मविद जाने । उसके वध को ब्रह्मवध मानें ।
ब्रह्म वध को जान पाप कराल । दूतों को आज्ञा दे यम तत्काल ।
कुंभी पाक में उनको डारे । फरसा से बहुत उनको मारे ।
जो त्रिया मार गर्भ गिरावे । कोल्हू में तेल उनसे पिरावे ।
स्वामी गुरु वध जो भी करता । छुरा धार से सिर उसका कटता ।
विश्वासघात नर जो भी करते । कालसूत्र में नर वो पड़ते ।
बालवृद्ध का वध जो भी करता । गरम तेल में नर वो जलता ।
परघर पर क्षेत्र जो भी हरते । परलोक कर्म उनके बिगड़ते ।
जो गुरु पापी नरक में जाते । हाहाकार शब्द वहाँ मचाते ।
चक्रों से तन उनके छेदें । फरसा शूल से उनको भेदें ।
गम्य अगम्य विचार ना करते । काज अकाज ना चित में धरते ।
तन उनको करकच छेदें । बहुत भाँति चोंच से भेदें ।

~~दोहा :- चोर वृत्ति जिस जीव की, करता जो शत्रुता ।~~
~~झूठ बोल और मद पिये,~~

दोहा :- चोर वृत्ति जिस जीव की, करे जो परद्रोह ।
झूठ बोल और मद पिये, पर निन्दा करे जोह ।

इन पापियों को यम विकराल। भयंकर कुण्ड में उन्हें देता डाल।
कन्यादान में जो रौल मचाते। विघ्न बहुत वो उसमें लाते।
दान देकर भी भांजी मारे। योग्य अयोग्य जो ना विचारे।
पर तप में करें विघ्न अनेक। हृदय ना रखते जो विवेक।
आप नास्तिक व्रत औरों के टारे। वेद शास्त्र जो ना उच्चारे।
हरि यश सुन हृदय जलाते। दूसरा सुने तो उसे बिचलाते।
देह उनकी कुलेल खाते। फिर नरक में दुख वो पाते।

~~[illegible] गुरु से पावें~~।

ज्ञान जो गुरु उसे बताये। पर विश्वास ना उसमें जताएं।
नर ऐसे नरक में जाते। बहुविधि दुख वहाँ पर पाते।
जो नर दीन के प्राण मिटायें। मित्र को मार घर उनके जलायें।

~~यम दुखों को~~

अंगारों में यम उन्हें जलाता। अति दारुण कष्ट उन्हें दिखाता।
गुरुधन नर जो भी हड़पते। पापी वो क्रिम कूप में पड़ते।
गुरु जिसका होता व्यभिचारी। जीवों को जो कष्ट देता भारी।
शिष्य शंका जो नहीं मिटाते। प्रजा को न्याय जो नहीं दिखाते।
उचित अनुचित जो ना समझते। मूरख निष्पक्ष न्याय ना करते।
तामिस्र नरक नर ऐसे जाते। दारुण कष्ट वो वहाँ पर पाते।
बिन देखे पर दोष गिनाते। यमराज अन्धा उन्हें बनाते।
अप्रिय वचन औरों से कहते। बिन कारण दुख मूरख लेते।
देव साधु ब्राह्मण धन जो हरते। तृष्णावश लोभ मन में करते।
सुचीमुख इक नरक का नाम। ऐसे जीवों का है वो धाम।
परनारि की जो अभिलाषा रखते। देव गुरु की निन्दा करते।
धर्म तीर्थ की जो निन्दा करते। दुख बहुत उन्हें नरक में मिलते।
शूलों पर पहले उन्हें बिठाते। फिर मन्द्र शूल उन्हें चुभाते।
गीध काक श्वान उनको खाते। जीव पापी इनसे बच ना पाते।

बहुत काल प्रिय थी जिनको नारी । त्यागे उसको यदि अधम अविचारी ।
बिना वैराग जो नारी त्यागे । हृदय उसका यदि औरों से लागे ।
मुरख वो नरक दुख पावें । कहाँ तक धर्म हम तुम्हें बतायें ।
हाथ पैर बाँध यम उन्हें सताये । जो जैसा करे फल वैसा पाये ।
सूर्य पुत्र आज्ञा जैसी देते । दूत आज्ञा मान वैसी लेते ।
चित्रगुप्त लेख जैसा लिखते । धर्मराज न्याय वैसा करते ।

दोहा :- कमाई जो जैसी करे, कभी न निष्फल जाय ।
सात समुन्दर अड़ंगा करे, फल मिले आगे आय ।

फर्श वहाँ लोहे की बनाते । फिर अग्नि प्रचण्ड वहाँ जलाते ।
प्रचण्ड ज्वाला वहाँ जलती ऐसे । अति भयंकर प्रलयाग्नि जैसे ।
वहाँ नर जाकर जलन दुख पाते । यमगण पकड़ उन्हें वहाँ जलाते ।
तीव्र नाखुन गरम कील जितने । पापियों को दुख देते सब उतने ।
सांकर बाँध कर हाथी लाते । यमगण मार उन्हें भागते ।
दुखी नर जब इत उत धावें । यमगण पकड़ उन्हें गिरावें ।
पाप कर्म उनको याद कराते । मार मार बहुत त्रास दिखाते ।
गरम खम्भे बहुत वहाँ लगाये । परनारि गामी उनसे सटाये ।
~~निज पुरुष छोड़ जो~~
निजपति छोड़ परपुरुष लुभायें । उस नारि को खम्भ से सटायें ।
यमगण उसको मार मिटाते । कटु वचन बहुत उसे सुनाते ।
यमदूत ऐसे कहें उसे पुकारी । तब तो तन मन सकल बिसारी ।
प्राणसमान चाही परनारी । अब इनसे मिल तू व्यभिचारी ।
यदि विधि यमगण वचन सुनाते । मार मार गरम खम्भ सटाते ।
शराब संग बहुत करते प्रीती । माँस खाकर करी अरीती ।
गरम तेल उसे मार पिलाते । मदिरा पिलाने का बहाना बनाते ।
हाहाकार बहुत पापी मचाये । रो रो विनती बहुत सुनाये ।
~~उसके ऊपर यमगण~~
~~ऊपर तेल यमगण उसके~~
यमगण उसपर तेल उड़ेलते । भीतर बाहर तन उसके जलते ।

असिपत्र नरक पापी ऐसे जाते । माँस खाने का फल ऐसा पाते ।
नुकीले वृक्ष दल वहाँ बिछाये । उसपे तन पड़के कटते जायें ।
पापी वहाँ से भागने लागे । बहुविधि विलाप करने लागे ।
या → पापी रहें ना वहाँ से भाते । बहुविधि विलाप वो करने लगते ।
कर परिघात पेट जिनके पलते । कुकर्म वो बहुविधि करते ।
वह असिपत्र नरक में जाते । शीश कटाकर दुख दारुण पाते ।
एक सिर कटे फिर दूसरे आते । शीश बहुत उसके कटते जाते ।
परहिंसक जो अधम नरेशा । कोल्हू में तन उसका पिसे हमेशा ।
जग में जो नर तेल चुराते । यमगण बहुत उन्हें सताते ।
तेल चोर तेल में गिरते । घी चोर घी कड़ाही पड़ते ।
जो दूध मधु दही चुराते । गण उन्हें रक्त कुण्ड डुबाते ।
तीर्थयात्री को जो नर हरते । पीव कुण्ड में नर वो पड़ते ।
देव सदन गुरुधाम तुड़वाते । मन आनन्द फिर जो मनाते ।
वन वाटिका पुष्प बिगाड़े । गोशाला यज्ञभवन उजाड़े ।
दीन भवन स्कूल गिराते । अस्थि चूर्ण कुण्ड डुबाये जाते ।
चप्पल वस्त्र औरों के चुराते । पर भोजन जो जीव छुपाते ।
लोह यंत्र बीच उन्हें पिराये । बहुविधि दुख उन्हें दिखाये ।
जो नर घर गाँव बाग जलाते । अग्नि कुण्ड में तन उनके जाते ।
जो निज स्वामी को दोष लगाते । पर निन्दा सभी को सुनाते ।
शाल्मली नरक में उन्हें बसाते । हाथ बाँधकर उन्हें लटकाते ।
फरसा बहुत उन्हें यमगण मारें । निर्दयी तनिक ना करुणा धारें ।
पर पुरुष जिस नारी को भायें । विधवा होके सुहागन कहलाये ।
गण लोह मूरत गरम इक लाते । उस नारी के संग मेल कराते ।
लोह शूल खर तपे ज्वाला । जीभ छेद मुख करे बेहाला ।
दुख पाते ऐसे अधम नर नारी । इससे तो कर्म करो विचारी ।

राज यम अपना ऐसे चलाता। कोई भी पार ना उसका पाता।
सुन विकल हुये धर्मदास। मुख सफेद ना आती सांस।
देख दशा सद्गुरु बोले। धर्म मन क्यूँ तुम्हारा डोले।
धर्मराज हृदय धीर अपने रखना। नरक क्या सुन भय ना करना।

धर्मदास वचन

हे साहिब यम बड़ा विकरार। किस विधि हंस पावें पार।
यही भय मुझको बहुत सताता। सोचके चित विकल हो जाता।

सतगुरु वचन

सुनके वचन प्रभु मुस्काते। कहके शब्द धर्म समझाते।
धर्मदास भय तुम ना करना। सत शब्द पास अपने रखना।
बाकी कथा सुनो ध्यान लगाके। करो आनन्द शंका अपनी मिटाके।
जब राजा बिनती हमसे कीन्हा। तब दिलासा मैं उनको दीन्हा।
डर ना उसे जो नाम को जपते। राजन किस कारण तुम हो डरते।
सत्य शब्द मेरा जिसके पास। उसके काल फन्द होते नाश।
सुन वचन राजा रखा धीर। बोले वचन काल बलवीर।

चित्रगुप्त वचन

हे साहिब तुम क्या विचारे। नगर हमारा आप उजाड़े।
जो साहिब तुम ऐसा करते। न्याय नीति सब तुम हरते।
सुनो साहिब एक बात हमारी। पंथ तुम्हारे आये दुनिया सारी।
~~साहिब विनती करूँ~~
विनती एक मैं करूँ हितकारी। सुनो अर्ज गुसाईं एक हमारी।
ब्रह्मा विष्णु शिव अधिकारी। उनकी आशा जगत में भारी।
उनसे हम ना कभी डराये। चूक चाल पर उन्हें नचाये।
और जीव की कौन चलाये। हमसे उबर एक ना पाये।
जो जीव चाल सीधी चलता। लोक प्रस्थान जीव वोही करता।
प्रपंच कर जो आप को ध्यावे। हमसे वो बच नहीं पावे।
जीव जो कर्म ना अच्छे करते। जीव ऐसे नरक हमारे बसते।

सतगुरु वचन

ज्ञानी सुनो वचन हमारे । हंस हमारे सबसे न्यारे ।
प्रपंच तुम्हारे देख डराते । जीव घात की ना मन में लाते ।
निशदिन जीव दया हृदय धारें । ज्ञान ग्रंथ मन बहुत विचारें ।
यमराज अब वैकुण्ठ जाओ । राजा को विष्णु से मिलाओ ।

चित्रगुप्त वचन

चित्रगुप्त उठे जोड़ अपने हाथ । बख्शो चूक हमारी नाथ ।
तुम धनी हम दास तुम्हारे । अपने दिल हम यही विचारे ।

साखी :- राजा सहित वहाँ से गये, वैकुण्ठ विष्णु पास ।
मध्य चौक खड़े हुये, दिखया सबका बास ।

चौपाई

अग्नि कौन है इन्द्र कुबेरा । दक्षिण दिशा है काल बसेरा ।
सुर कौन नैऋत में रहते । देवी निवास पश्चिम को कहते ।
देववास वायव कहलाये । गण गन्धर्व मुनि देव रहायें ।
उत्तर दिशा रहें भगवान । कहलाता जो वैकुण्ठ धाम ।
कनक भूमि रत्नों की पोती । चमके वैकुण्ठ ज्यों जगमग ज्योति ।
जहाँ देव दर्शन को आते । लक्ष्मी विष्णु वहाँ आनन्द मनाते ।
साथ हम राजा के जाते । देख हमें विष्णु शीश झुकाते ।
डाल के आसन हमें बिठाया । पाके दर्श सौभाग्य मनाया ।
बड़भागी जो दर्शन पाये । राजा को संग कहाँ से लाये ।

अमर सिंह वचन

सुनो भगवान हमारी वाणी सेवा आपकी निष्फल जानी ।
एकतर मन्दिर हम बनवायें । मूरति स्थापना वहाँ करवायें ।
रखें मन्दिर मे हम एक पुजारी । दीं उसको हमनें सुविधा सारी ।
जितना कहते वेद पुराण । ब्राह्मणों को दिया उतना दान ।
गाय सींग सोने से मढ़ाये । पीताम्बर फिर उसे उढ़ाये ।

एक सौ गाय ऐसे ही सजाये । द्विजो को दान उन्हें कराये ।
इस विधि सेवा किये तुम्हारी । फिर भी ना कोट चौरासी हमारी ।
सुन राजा हम तुम्हे समझाते । पाप तुम्हारे हम कैसे छुपाते ।
राजा अकर्म बहुत तुम करते । जीव मार के भक्षण करते ।
शिकार खेलने वन को जाते । नाहक जीव मार के लाते ।
जीव बहुत तुमने मारे । कहाँ छिपाये पाप तुम्हारे ।

दोहा :-
चार खान भ्रमवश, किये कर्म अपार ।
विष्णु कहे राजा सुनो, कैसे करो भवपार ।

चौपाई

सतगुरु युक्ति एक बनाये । लीला तभी वहाँ दिखाये ।
राजा शीश हाथ धरे करतार । निकले मुख से काग अपार ।
बहुत काग पेट में जलते । बहुत ~~पिण्ड~~ अलग पिण्ड से बनते ।
भगवान देख उन्हें शरमाते । बोल मुख से निकल ना पाते ।
तत्क्षण हम वहाँ से सिधाते । मानसरोवर हम दोनों जाते ।
दयावंत पुरुष को लोक दिखाये । कामिनी शोभा वहाँ फैलायें ।
राजा बहुत शुक्र मनाता । साहिब चरण शीश झुकाता ।
चार भानु प्रकाश वहाँ फैलाते । पुरुष ध्यान हंस जहाँ लगाते ।
अंग कामिनी के बहुत झलकाते । रैन दिवस जहाँ समझ ना आते ।
सिंहासन एक वहाँ पर सजे । जिसपर चन्द्र अंश विराजे ।
राजा प्रीत साहिब से दिखाये । भला ज्ञानी के दर्शन पाये ।
पुरुष दया बहुत दिखाये । आज्ञा प्रस्थान की हमें सुनाये ।
चन्द्रअंश को शीश झुकाते । आतुर हम दोनों तब सिधाते ।
राजा तब शरीर समाये । राजा उठ बहुत अकुलाये ।
राजा हमें तब शीश नवाये । प्रभु हमको अब पार लगाये ।

सतगुरु वचन

राजा सुनो वचन अब हमारे । करो आरती अब तुम प्यारे ।
अमरसिंह को जो वैकुण्ठ दिखाया । सब वृत्तान्त तुम्हे सुनाया ।

धर्मदास वचन

धर्मदास अपने तब जोड़ि हाथ । दया करो अब तुम दीनानाथ ।
पूर्ण कथा मुझे आप सुनाये । दयालु मुझसे ना आप छिपाये ।
धर्मदास सम्पूर्ण कथा तुमसे कहता । भगति राजा जैसी करता ।
जितने जीव मुक्ति पद पाते । सबकी बात अब तुम्हें बताते ।

अमरसिंह वचन

दोहा :- राजा शीश झुकाइ के, बिनती करे करजोड़ ।
हमको सतगुरु तारिये, हमसा अधम ना और ।

सतगुरु वचन

अज्ञान राजा अपना मिटाये । युग कंकत से हम चले आये ।
मानसिंह एक बड़ा महाराज । उसके नगर किया वास समाज ।
तीस लाख और सात हजार । इतने हंस हुये भव से पार ।
युग परवान चौकड़ी बिताये । इतने युग हम अमे में लगाये ।
कहे लेख पुछो राजा सुजान । अपने जीव का करो कल्याण ।

छन्द/दोहा :- गुरु-चरण पावन पराग से, मृदुल मंजुल मिठास ।
मोह माया नाश करें, तरु सम शील प्रकाश ।
मन माहीं जो नर, रखते आरती आस ।
भक्ति ज्ञान वैराग से, सतलोक पाते बास ।

अमरसिंह वचन

सोरठा/दोहा आपके चरण अनुराग मुझे, और ना दूजी आस ।
कृपा कर मुझ दास को, रखिये चरणों के पास ।

छन्द / दोहा :- आदि ब्रह्म अचिंत का, सदा करिये गुणगान ।
अमर अविचल नाम का, करिये सदा ही ध्यान ।
अक्षय नाम आनन्दरूप, स्थिर ज्यों पहाड़ ।
अधम उधारण अखिलपति, अखण्ड स्वरूप महान ।

सोरठा / दोहा :- हंस राज हंसपति, हंस उबारण नाम ।
सार शब्द दाता गुरु, हंस श्रवण सुखधाम ।

चौपाई

मैं कीट गुरु भृंगी सम पाये । अमृत पिला निज समान बनाये ।
हम लोह कुधातु कहलाते । गुरु पारस हमें स्वर्ण बनाते ।
एक मुख महिमा कही ना जाये । जो कहुँ मुख सौ पद्म बनाये ।
पंछी युगल होता जैसा । नर नारी जोड़ा भी वैसा ।
जब गुरु मुझे शब्द बताये । रानी संग वैराग कराये ।
तुम दयालु सब विधि लायक । हम हैं जीव अकाम नलायक ।
तभी विनय प्रभु तुम्हे सुनाऊँ । करो दया तो मुक्ति पाऊँ ।

रानी वचन

सुनो अमर हम तुम्हे सुनाते । करो वही जो तुम्हें बताते ।
तन मन धन साहिब को दीन्हा । सिर के बदले दान भक्ति लीन्हा ।
रमा नाम एक तुम्हरी रानी । गुरु सेवा सदा करती रानी ।

राजा वचन

तब राजा गुरु बिनती गाये । प्रभु निज भक्त मुझे आप बनाये ।
साहिब मुझे परवाना दीजें । जो कहो वही हम कीजें ।
कौन वस्तु गुरुदेव मंगाये । साहिब वही आप मुझे बताये ।
जिससे तरें हम भवसागर । शब्द स्वरूप कहो तुम नागर ।

दोहा :- मुक्ति लोक जिससे मिले, हो जहाँ पुरुष स्थान ।
जन्म मरण व्यापे नहीं, करें सदा पुरुष का ध्यान ।

रानी वचन चौपाई

भली बात तुम पूछें मुझसे । निज गत वचन कहूँ मैं तुझसे ।
राजा को हम सीख बताये । जिससे जीव काज बनाये ।

दोहा :- चौदह कदली खंभ लो, गाड़ो उत्तम स्थान ।
मध्य चँदवा बाँध के, कनकासन कर निर्माण ।

चौपाई

गज मुक्ताओं से थाल भराये । चन्दन चून से चौक पुराये ।
कंचन के पनवार बनाये । स्वर्ण बर्तन जल भर के लाये ।
तीन हजार मंगवाये पान । कंद पेसरी सात प्रमाण ।
सात सेर मिष्ठान मंगाये । छत्तीस नारियल संग लेके आये ।
दो सौ इक्कतीस आई सुपारी । उतनी खार भी लाये संभारी ।
इतनी लौंग इलायची लाये । मेवा अष्ट भी हम मंगाये ।
मिर्च जायफल भी लाये भाई । द्राख जावत्री भी शीघ्र मंगाई ।
शक्कर बादाम कपूर मँगाये । सात हाथ वस्त्र भी लाये ।
कँचन कलश यहाँ सजाओ । उस पर बाती पाँच जलाओ ।
फूल चमेली अगर मंगाई । परिमल और सुगंध बढ़ाई ।
भाँति भाँति पुष्पमाला बनाये । तत्काल सबकुछ आन धराये ।
आसन पर हम वहाँ विराजे । सकल समाज शब्द धुन गाजे ।
अचिंत नाम का चौका कीन्हा । तत्क्षण थाल हाथ में लीन्हा ।
सकल लोग अनुराग मनाये । सबको शब्द विरह सताये ।
कोयल आनन्द मनाती जैसे । सकल हंस आनन्दित ऐसे ।
तब हम बैठे थाल धराये । सकल हंस शीश हमें झुकाये ।
जब हम नारियल लीन्हे हाथ । सकल जीव तब हुये सनाथ ।
नारियल हाथ में अपने लीन्हा । तिनका तोड़ परवाना दीन्हा ।
भय छूटे जप निर्भय नाम । सतगुरु नाम दे विश्राम ।
काल जाल से हंस छुड़ाये । राजा रानी भक्ति मन लाये ।

दोहा :- राजा रानी प्रेम संग, लेके सकल जीव साथ ।
नाम दान सबको दिये, मस्तक धरि के हाथ ।

चौपाई

~~किये दंडवत सब बहु भाँति ।~~
कीन्हे दंडवत सब बहु भांती । राजा रानी पुत्र और नाती ।
तब खान खेमसिंह आते । नर नारी गुरु को शीश झुकाते ।
शब्द खेमसिंह भी पाते । भाव भक्ति मन माहि समाते ।
नाम रतनचन्द कहे कर जोड़ । दया करो मुझपे बन्दी छोड़ ।
आये चौधरी प्रेमचन्द नाम । तन मन से किया प्रनाम ।
तबहीं सेठ रामजा आये । प्रेम भाव से शीश नवाये ।
जीव बहुत लिये सतनाम । गुरु चरण कर सब करते ध्यान ।

छन्द/दोहा :- राजा बड़ा विनती करे, प्रभु दीन दयाल ।
~~हंस नायक हमको दिये~~, दिये शब्द रसाल ।
हंस नायक प्रभु हमें, दिये शब्द रसाल ।
ऋषि नारद ब्रह्मा हरी, खोजते सभी सतनाम ।
पार ना पाये शारदा, गुरु दिये वो शब्द महान ।
दयालु दया कीजिये, निज दास अपना जान ।
सतलोक मुझे ले चलो, देके ~~मुझ~~ भक्ति मुझको दान ।

रानी वचन चौ०

हे राजा तुझे एक बात बताऊँ । प्रथम भवपार प्रजा को कराऊँ ।
इतने दिन तुम यूँ ही बिताना । प्रजा पीछे लोक को जाना ।

राजा रानी वचन

राजा रानी कहे जोड़ अपने हाथ । सुनिये विनती ~~मेरी~~ हमारी नाथ ।
भवसागर में दुख बहुत सताये । क्षण भर हम यहाँ रुक ना पायें ।
इक्कीस लाख जीव शरण तुम्हारी । बहुत वर्ष बाद आये हमारी बारी ।

जो तुम सतगुरु हंस सहाई । बनो दयाल हंस सुखदाई ।
अधम उबारण नाम तुम्हारा । विचारो ना तुम अगुण हमारा ।

ज्ञानी वचन

~~[illegible]~~ । ~~[illegible]~~
राजा जब ज्ञानी को बताये । राजा सकल हंस बुलवाये ।
सकल हंस सतगुरु संग लागे । इक्कीस लाख हंस तन त्यागे ।
एक संग पाये सब नामकादान । पंहुचे सभी पुरुष के धाम ।
भक्ति भाव हृदय में समाये । सर्वस्व देके चरणामृत पाये ।
काल भय जिसको सताये । सार शब्द माहीं सुरति लगाये ।
मन निरंजन तेज ओंकारा । ये सभी काल पसारा ।
नाभि कमल से सरति लगाये । मकर तार षट शब्द समाये ।

~~पुरुष~~
पुरुष दर्श हंस जब पाते । जन्म मरण की शंका मिटाते ।
एक वर्ण हुये राजा रानी । सब जाने उसके भेद कहानी ।
पुरुष सेज हंस वहां आये । अमृत भोज करते हुये अघाये ।
काया अमर अमरफल पाये । दुख द्वंद सभी मिटाये ।
यही विधि हंस सारे आये । सबही हंस एक नाम समाये ।

दोहा :- क्या जीव करनी करे, क्या चलेगा चाल ।
सतगुरु नाम प्रताप से, कभी ना सताये काल ।
कहने सुनने की नहीं, ना देखा देखी बात ।
जाने जो शब्द को, होगा वही सनाथ ।

चौपाई

पुरुष ने सब जीव बुलाये । राजा रानी हंस सारे आये ।
हंस सब उन्हे बात बताये । भाग्य बड़े जो दर्शन पाये ।

पुरुष वचन

कैसे कर्म तुम करके आये । हंस सारे मुझे यह बताये ।

राजा रानी वचन

राजा रानी शीश नवाते । बार बार प्रभु बिनती गाते ।
कर्म चाल ना हमने जानी । अन्ध कूप थे हम अज्ञानी ।
आके हमको जगाये ज्ञानी । सतगुरु शब्द से बोधे स्वामी ।
पुरुष हुक्म से ज्ञानी आये । कर्म चाल ज्ञान वही बताये ।
ज्ञानी वचन कहे प्रमाण । हंस नहीं कोई इनके समान ।
जीव सभी संग इनके आये । पुरुष सुनके आनन्द पाये ।
पुरुष अंक हंस अपने लगाये । स्वर्ण सिंहासन उन्हे बिठाये ।
सेत छत्र शीश उनके सजाया । कोटि सूर्य तेज राजा पाया ।
यही विधि राजा लोक सिधाये । अमर सिंह बोधा धर्म को भाये ।
समझ ना आई ये मुझको बात । समझाओ वही तुम मुझको नाथ ।
हंस सभी संग लोक सिधाये । श्रेष्ठ पद क्यूं राजा पाये ।

कबीर वचन

धर्मदास तुमको हम समझाते । तुम्हारे मन की शंका मिटाते ।
राज मान अपना भुलाया । जीव मुक्ति का मार्ग बनाया ।
पुरुष प्रश्न राजा से करते । निज कर्म राजा ना उनसे कहते ।
राजा त्यागे निज मान बड़ाई । जिससे दया पुरुष को आई ।
धर्मदास सुनो तुम ध्यान लगाय । तभी श्रेष्ठ पद राजा पाय ।

धर्मदास वचन

धर्मदास कहे जोड़ अपने हाथ । दया किये तुम हमपे नाथ ।
दीन दयाल दया के सागर । अच्छी कथा सुनाये आगर ।

दोहा :- धर्मदास अधीन हुये, बिनती करे जोड़ हाथ ।
कथा कही अमर की, संशय मिटाये नाथ ।

इति श्री बोध सागरे ।
। श्री अमरसिंह बोध समाप्त: ।

19/3/2014